आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2527 • उदयपुर, गुरुवार 25 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

जागा विश्वास जिंदगी के लिये

शब्बीर हुसैन के परिवार में छः सदस्य है। पिता जी कॉस्मेटीक की दुकान चलाते हैं। जन्म के डेढ़ वर्ष बाद अचानक तेज बुखार से शब्बीर बेहोश हो गया। और होश आने पर उसने पाया कि उसके पांव पूरी तरह बेजान हो चुके थे। पूरा शरीर निष्क्रिय हो चुका था । श्री गुलाम मोहम्मद पिता ने शब्बीर को श्री नगर के एक अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि शब्बीर को पेरेलाइसिस हो चुका है इसका कोई इलाज नहीं है। गुलाम मोहम्मद ने शब्बीर को अन्य कई अस्पतालों में दिखाया लेकिन कहीं से भी आशाजनक उत्तर न मिलने पर गुलाम मोहम्मद टूट से गये। एक दिन टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर गुलाम मोहम्मद के दिल में शब्बीर के पांवों पर चलने की उम्मीद जागने लगी। कुछ दिन कार्यक्रम देखने के पश्चात् उन्होंने संस्थान में फोन किया और संस्थान से सकारात्मक उत्तर पाकर गुलाम मोहम्मद अपने पुत्र शब्बीर को लेकर नारायण सेवा संस्थान में आये। और शब्बीर के पांवों के दो सफल ऑपरेशन हुए शब्बीर के पांवों में नई जान आने लगी।

ऑपरेशन से पूर्व शब्बीर की टांगे टेढ़ी थी । वह चलने – फिरने में बिल्कुल ही असमर्थ था। ऑपरेशन के बाद शब्बीर सामान्य रूप से अपने पांवों पर खड़ा होकर चलने लगा है। शब्बीर जैसे ओर भी कई दिव्यांग–बंधु जिनका जीवन घर की चार दिवारी तक ही सिमट कर रहा गया है, उन्हें अपने पांवों पर खड़ा कर जीवन की मुख्यधारा में शामिल करने का सफल प्रयास नारायण सेवा संस्थान कर रहा है। संस्थान के ये सफल प्रयास आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही संम्भव हो पा रहे है।

बीस वर्ष भोगी पीड़ा, अब खुश हूँ!

जन्म के 6 माह बाद ही पोलियों की शिकार हुई स्वाति (22) नारायण सेवा संस्थान में पिछले वर्ष पोलियों केरेक्टिव सर्जरी के बाद अब बिना सहारे खड़ी होती और चलती है।

गोरखपुर (उ.प्र.) में बीटीएस की छात्रा स्वाति सिंह ऑपरेशन के बाद चेकअप के लिए आई है।

उन्होंने बताया कि बीस वर्ष तक जो पीड़ा भोगी, उसे याद करती हूँ तो रो पड़ती है। उत्तरप्रदेश के कुछ हॉस्पीटल में लम्बा इलाज भी चला, लेकिन फायदा नहीं हुआ। घिसकर चलना ही उनकी नियति था।

नारायण सेवा संस्थान के बारे में टेलीविजन चैनल से जानकारी मिली तो गत वर्ष नवम्बर में यहाँ आई और डॉ. ए.एस. चुण्डावत ने घुटने का ऑपरेशन किया। उसके बाद अब केलिपर्स की सहायता से वे खड़ी भी होती हैं व बिना सहारे चलती भी हैं। पाँव का टेढ़ापन भी काफी ठीक हो गया है।

निहाल हुई नारायण सेवा

जन्म के 6 महीने बाद ही पोलियोग्रस्त हो गई। चारों हाथ–पैरों से चलती थी। टी.वीपर संस्थान में दिव्यांगों के सफल ऑपरेशन की जानकारी प्राप्त कर श्री धर्मेन्द्र कुमार (बलसरा, झारखण्ड) प्रियंका को लेकर संस्थान में आये। ऑपरेशन की तारीख मिलने पर वे प्रियंका को लेकर पुनः संस्थान में आये, जहां प्रियंका के 4 सफल ऑपरेशन सम्पन्न हुए।

अब प्रियंका दिव्यांगता से मुक्त होकर कैलिपर्स के सहारे चलने फिरने में सक्षम होकर प्रसन्न हैं। श्री धर्मेन्द्र कहते हैं –"मेरे जैसे गरीब की यह खुशनसीबी है कि ऑपरेशन, दवाइयों का खर्च, रहना, खाना सभी कुछ निःशुल्क मिला और – मेरे घर से भी अच्छा आराम यहां मिला है।" जन्म के छः माह बाद बुखार में घनश्याम (पीलगांव, महाराष्ट्र) का पांव पोलियाग्रस्त हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होते हुए भी महाराष्ट्र एवं आन्ध्रप्रदेश सहित कई स्थानों पर इलाज के लिए दिखाया, लेकिन सब कोशिशें बेकार रही। टीवी. पर संस्थान का कार्यक्रम देखकर घनश्याम अपने बड़े भाई के साथ संस्थान पहुंचा।

संस्थान के चिकित्सकों द्वारा घनश्याम के पांव की जांच की गई, जब घनश्याम के पांव का सफल ऑपरेशन हुआ। घनश्याम की आंखों में खुशी के आंसू छलक पड़े जब वह कैलिपर्स पहन कर अपने पावों पर चलने लगा। ऐसे एक–दो नहीं लाखों से अधिक दिव्यांगों को अपने पावों पर खड़ा किया है आपके इस संस्थान ने। यह सब आपके आर्थिक सहयोग से ही संभव हो पाया है।

सेवा जो संस्थान कर पाया

आशु (7 वर्ष), पिता– श्री देवेन्द्र जी,शहर– कालका, पिंजौर, हरियाणा, जन्म से ही दिव्यांग आशु को शहर के कई अस्पतालों में दिखाया, लेकिन कहीं पर भी इलाज नहीं हो पाया। टी.वी. पर संस्थान की जानकारी पाकर आशु को लेकर उसकी मां नारायण सेवा संस्थान में पहुँची। जांच के पश्चात् आशु के पांव का ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के बाद वह अब पांव में पूर्व की अपेक्षा अधिक राहत महसूस कर रही है।

जितेन्द्र कुमार (15 वर्ष), पिता – श्री शिवजी शहर–सिमराव / भोजपुर (बिहार), जितेन्द्र जन्म से दिव्यांग, 15 वर्षों से रेंगती जिन्दगी का भार ढो रहा है। गांव के परिचित से संस्थान के बारे में जानकर पिता श्री शिवजी के मन में पुत्र के चलने की उम्मीद जागी, नारायण सेवा संस्थान में आकर पुत्र की जांच करवायी और जितेन्द्र के पहले पांव का एवं दूसरे पांव का सफल ऑपरेशन हुआ। जितेन्द्र अपनी दिव्यांगता से मुक्ति पाकर प्रसन्न है। जितेन्द्र अपने पैरों पर खडा होकर परिवार का सहारा बना।

राजदीपक, आयु–17 वर्ष, पिता–राकेश कुमार, पता–गाँव–बम्भोरी, जिला मेनपुरी (उ.प्र.)। एक पाँव में पोलियो था। घुटने पर हाथ रखकर चलाता था। पंजा एवं एड़ी टेढ़े थे, एक पड़ोसी उदयपुर में ही नौकरी करते हैं। उनसे संस्थान की जानकारी मिली और यहाँ आकर दिखाया। राज दीपक के पैरों का ऑपरेशन हुआ। एडी टिकने लगी है। पैर पर पूरा वजन देकर चलना–फिरना संभव हो गया है। पीड़ा से मुक्ति दिलाने के लिए संस्थान कर्मचारियों को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay | PhonePe | Paytm
narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

भीलवाड़ा के सर्जिकल शिविर में तत्कालीन मुख्यमंत्री महोदय जी रात को साढ़े ग्यारह बजे भी पधारे। ढ़ाई घण्टे वो वार्ड में घूमें, ऑपरेशन थियेटर में पौने घण्टे रहे वो। और वार्ड में लोगों ने कहा कि–आपने क्या जादू कर दिया? जहाँ भी जाते हो वहाँ नारायण सेवा की तारीफ करते। मैंने कहा–जादू नहीं, काम का जादू है। ये दीन–दुःखी की सेवा का जादू है। ये द्ररिद्र नारायण की सेवा का जादू है। ये पौंछ लो दुःखी का जादू है। दुःखों को बांटने का जादू हैं।

भावक्रांति जन–जन में, अब हम फैलाऐंगे।
मन के सारो विकारों को, मिलकर मिटाऐंगे।
बंदऊँ संत असज्जन चरना। दुःखप्रद उभय बीच कछु बरना।।
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दारून देहीं।।

कोई– कोई ऐसे होते है झोंके। एक झोंक ऐसी होती है, कीड़ा होता है पानी का वो टेढ़ा चलता है यूं– यूं। किसी ने पूछ लिया – भाई सीधा चलना। मैं तो सीधो ही चाल रियो हूँ, पाणी टेढ़ो है। ऐसे भी लोग मिलेंगे उनसे जय रामजी करते रहना, जय जिनेन्द्र करना, जयश्री .ष्णा करना। मिलना उनको प्रसाद जेब में हो तो दे देना। राम–राम करना और फिर निकल जाना। दुश्मनी भी मत कर और दोस्ती भी मत कर जो।

दोष तीन कर दो अलग, मतलब, लालच, दाम।
दो सतवादी भी जब मिले, दोस्ती उसी का नाम।

दोस्ती करना सतवादियों से। महाभारत की कथा में द्रोपदी के पिताजी, द्रुप्तराज की कथा आती है। बहुत पराक्रमी थे। पर जिन अर्जुन जी ने नीचे तेल–तेल में देखना। तेल भी तैर रहा है। और ऊपर एक मछली लटक रही है। वो गुम रही है, मछली जीवित नहीं है। खिलौने की मछली है, वो गुम रही है तेज गति से। और तेल में देखकर के उस मछली की आँख को देखकर के और उसकी आँख में तीर को भेदना। जिस अर्जुन ने किया, वो ही अर्जुन कुछ सालों पहले अपने गुरू द्रोणाचार्य जी। गुरू तो थे ही भाई, पर वो एकलव्य का अंगूठा ले लिया ना इसलिये इतिहास ने उनको माफ नहीं किया हो। तो उस अर्जुन को कहा था कि– द्रुप्तराज को बांध कर ले आओ। ये हम कभी दोस्त थे, कथाऐं तो बहुत आती है।

महाभारत के युद्ध को,
कभी ना जाना भूल।
मन से फूट मिटाईये,
फूट पतन का मूल।।

लाला भीलवाड़ा के सर्जरी शिविर का मैं बहुत आभारी हूँ। और मैं आभारी हूँ इगतपुरी का जहाँ दस दिन रहा। मुझे मेरी मंजिल मिल गयी। भाव को शुद्धि क्योंकि वाणी और कर्म भाव की सत्ता में है। आज सुबह बड़े भाई साहब राधेश्याम जी भाईसाहब। सत्संग में फरमा रहे थे– भाव संकीर्तन भी होता है। संकीर्तन भगवान का नाम लेना भाव से।

भाव हमारे अच्छे हैं तो
बरकत हमारी दासी है।
और कर्म हमारे अच्छे है तो
घर में मथुरा– काशी है।।
भावक्रांति को जो अपनाता है,
हर बार वो मुस्कराता है।
जीना ये सिखाए, चिंता को ये मिटाए।
प्यार ये बरसाए, रिश्तों को महकाए।
भावक्रांति को जो अपनाता है,
हर बार वो मुस्कराता है।।

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay | PhonePe | Paytm
narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

सम्पादकीय

एक वंदना चलती है जिसमें पद्यांश आता है–'तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।' अर्थात्यह तन, मन, धन और जीवन सब कुछ परमात्मा का दिया हुआ है। इसे पुनः उसको समर्पित करने में मेरा क्या त्याग है ? पर परमात्मा हमारे तन, मन, धन, जीवन का करेंगे क्या ? क्या उपयोग है उनके लिये इनका ? तब शास्त्रज्ञ व विज्ञान व्याख्या करते हैं कि तन है परमात्मा के पसंद के कार्यों को करने के लिये। मन है परमात्मा के चिंतन के लिये, धन है परमात्मा द्वारा उत्पन्न जीवों की पीड़ाओं के हरण के लिये और जीवन है परमात्म–पथ पर चल कर इसे पावन करने के लिये। यही कार्य करना परमात्मा को तन, मन, धन, जीवन समर्पित करना है। दुर्भाग्य व अज्ञान के कारण हम इस सूत्र को बोलते तो हैं किन्तु न ग्रहण करते हैं और न पालन। केवल बोलने से भी कुछ आनंद तो आता ही है, फिर ग्रहण करने व पालन करने में तो परमानंद आयेगा ही। लेकिन हम वाचिक परम्परा के प्रभाववश वाणी–वीर तो बन गए हैं पर आचरण पक्ष हमारा आज भी थोथा ही है। आवश्यकता अब आचरण की है।

कुछ काव्यमय

सिद्धान्त हमेशा हमें
बहुत प्रभावी से लगते हैं
क्योंकि उनके पीछे होती है
अनुभवों की एक शृंखला।
पर वही सिद्धांत जब
आचरण में उतर जाते हैं
तो लक्ष्य सामने ही होता है,
मंजिल तक जाने में देर कहाँ है भला?

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

बुरा वक्त : मित्रता की कसौटी

सच्चा मित्र वही है, जो कठिन से कठिन परिस्थिति में भी न केवल साथ खड़ा रहे। बल्कि खतरों से खेलने पर अमादा होकर मित्र को बचाने के लिए तत्पर रहे। एक राजा की उसी राज्य के एक सज्जन व्यक्ति से मित्रता थी। दोनों एक दिन टहलते हुए जंगल की तरफ निकल गये। राजा ने एक फल तोड़ उसके छः टुकड़े किये।

एक टुकड़ा अपने मित्र को दिया। मित्र ने उसे खाकर और मांगा। राजा ने दे दिया। जब तीसरा मांगा तो राजा ने थोड़ा सकुचाते हुए वह भी दे दिया। मित्र ने जब शेष टुकड़े भी मांगे तो राजा ने मन मारकर उसे दो और टुकड़े दे दिये। मित्र वे टुकड़े भी बड़े चाव से खा गया और छठे की मांग कर दी।

इस पर राजा मन ही मन क्रुद्ध हो गया कि कैसा मित्र है, पूरा फल

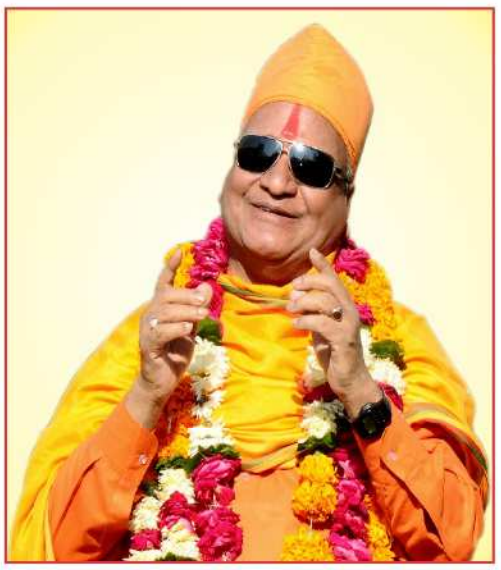

स्वयं खाना चाहता है। तब राजा ने कहा –यह टुकड़ा तो मैं ही खाऊँगा, तुम्हें नहीं दूँगा। ऐसा कहने के उपरांत राजा ने वह टुकड़ा मुँह में डाला और चबाते ही झट से थूंक दिया, क्योंकि वह बहुत ही कड़वा था। राजा ने कहा–हे मित्र! तुमने कड़वे फल के पाँच टुकड़े बिना शिकायत ही खा लिये।

मैं तो मन में यह सोच रहा था कि फल बहुत मीठा होगा और तुम पूरा फल खाना चाह रहे हो परंतु जब मैंने खाया तब पता चला कि तुम मुझे कड़वा फल नहीं खाने देना चाहते थे। फल के इस कड़वे स्वाद के कारण तुमने यह सब किया।

तुमने यह क्यों नहीं बताया कि यह फल इतना कड़वा है? इस पर मित्र ने उत्तर दिया – राजन, आपने मुझे कई बार मीठे फल खिलाए। एक बार अगर कड़वा फल आ गया तो मैं कड़वा कहूँगा क्या? आपने मुझ पर अनगिनत उपकार किये हैं, अगर एक बार कष्ट आ गया तो मैं क्या वह कष्ट आपको बताऊँगा? राजा मित्र की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हो गया और उसे गले लगा लिया। एक मित्र को दूसरे मित्र के सुख–दुःख में बराबर का भागीदार होना चाहिए। मित्रता भेदभाव नहीं देखती है। सच्चा मित्र वही है, जो कठिन से कठिन हालत में भी साथ खडे रहे है।

–कैलाश 'मानव'

भगवान और इंसान

एक भक्त ने मंदिर में जाकर भगवान की मूर्ति से कहा–भगवन्! आप खड़े–खड़े थक गए होगें। आप थोड़ा विश्राम कर लीजिए। मैं आपके स्थान पर खड़ा हो जाता हूँ। भगवान ने भक्त की बात स्वीकार कर ली, परंतु उसे सचेत करते हुए कहा –मैं विश्राम करके आँऊ, तब तक तुम यहाँ मेरे स्थान पर खड़े रहना। किसी को कुछ मत कहना। जैसे मैं चुपचाप रहते हुए किसी को कुछ नहीं कहता, तुम भी वैसे ही करना। भक्त ने विनयपूर्वक उत्तर दिया – जी प्रभु, मैं आपकी आज्ञा का अक्षरशः पालन करूँगा। आप विश्राम कर लीजिए।

भगवान वहाँ से चले गए और भक्त भगवान के स्थान पर मूर्तिवत् खड़ा हो गया।

थोड़ी देर पश्चात् वहाँ एक धनाढ्य सेठ आया और हाथ जोड़कर भगवान बने भक्त से बोला –प्रभु ! मैंने जो नई फैक्ट्री लगाई है, उस पर आपकी कृपा दृष्टि रखना और मुझे समृद्ध बनाने की कृपा करना। जैसे ही वह सेठ वापस जाने लगा तो अचानक उसका बटुआ गिर गया। भगवान की मूर्ति बने भक्त ने बटुआ देख लिया, उसने सोचा बता दूँ, किन्तु अगले ही पल उसे भगवान की याद आ गई और बड़ी कठिनाई से अपने आपको बोलने से रोका। वह सेठ चला गया।

तत्पश्चात् एक अत्यंत ही निर्धन, दुःखी और विपत्ति में फँसा हुआ व्यक्ति आया और भगवान बने भक्त के सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा– हे भगवान! मैं बहुत दयनीय स्थिति में हूँ, कुछ ऐसी कृपा करो कि मेरे और मेरे परिवार की दो समय की रोटी की व्यवस्था हो जाए। यह कहकर, वह कहकर, वह मुड़ा ही था कि उसे उस धनाढ्य सेठ का गिरा हुआ बटुआ दिखाई दे गया। उसने वह बटुआ उठाया और प्रसन्नचित्त भाव से भगवान को प्रणाम करते हुए धन्यवाद देने लगा। उसके मन में ईश्वर के प्रति आस्था और बढ़ गई। वह बटुआ लेकर वहाँ से खुशी–खुशी चला गया। निर्धन व्यक्ति के जाने के पश्चात् वहाँ एक नाविक आया। वह कुछ दिनों के लिए समुद्री यात्रा पर जाने वाला था। नाविक भगवान से प्रार्थना करने लगा – हे परमात्मा ! मेरी 15 दिनों की यात्रा को सफल एवं निर्बाध पूरी करवाना। मेरी यात्रा के दौरान समुद्र शांत रहे तथा किसी प्रकार का कोई तूफान आदि न आए। वह इस प्रकार की प्रार्थना कर ही रहा था कि उसी समय वह धनाढ्य सेठ पुलिस को लेकर आ गया और नाविक की ओर इशारा करते हुए बोला – यही वह व्यक्ति है, जिसने मेरा बटुआ लिया है। इसे पकड़ लीजिए। जैसे ही पुलिस ने उस नाविक को पकड़ा, तभी भगवान बना भक्त तपाक् से बोल पड़ा – नहीं.....नहीं, इस नाविक ने बटुआ नहीं चुराया, बल्कि बटुआ तो इससे पहले आया वह फटेहाल, निर्धन व्यक्ति ले गया है। पुलिस ने उस नाविक को छोड़ दिया और उस निर्धन व्यक्ति को ढूंढकर गिरतार कर लिया। वह भक्त मन ही मन बहुत प्रसन्न हो रहा था कि मैंने आज सत्य बोलकर एक निर्दोष को बचा लिया और सही अपराधी पकड़वा दिया। उसी समय भगवान वहाँ आ पहुँचे। भगवान ने भक्त से उसकी प्रसन्नता का रहस्य पूछा तो भक्त ने अपनी शेखी बघारते हुए पूरी घटना अक्षरशः बता दी और यह भी कहा कि अगर आप भी होते तो शायद भी ऐसा ही करते। यह सुनकर भगवान अप्रसन्न और निराश हो गए। उन्होंने भक्त से कहा – तुमने बहुत गलत कर दिया। सृष्टि का जो न्याय था, उसके रंग में भंग डाल दिया। सृष्टि का जो न्याय था, उसके रंग में भंग डाल दिया।

भक्त आश्चर्यचकित हो गया। उसने भगवान से पूछा – ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने तो सत्य का साथ दिया है। भगवान ने उसे विस्तार से समझाया। जिस सेठ का बटुआ गुम हुआ था, वह बहुत छल–कपट करके अमीर बना था, जिस निर्धन को तुमने पकड़वा दिया, उसके परिवार का भरण–पोषण उस बटुए के रुपयों से कई दिनों तक हो सकता था, लेकिन अब वह और उसका परिवार भूखे मरेंगे तथा जिस नाविक को तुमने जेल जाने से बचाया, वह अब समुद्री यात्रा के दौरान आने वाले तूफान में मृत्यु का ग्रास बन जाएगा। इस तरह तुमने अपनी नासमझी से एक नहीं, अपितु दो परिवारों को मौत के घाट उतार दिया। भक्त को अपनी गलती का अहसास हुआ। इसीलिए कहते है कि ईश्वर जो करता है, वह अच्छे के लिए ही करता है। संत कबीरदास जी के शब्दों में –

कहत कबीर सुनहु रे लोई,
हरि बिन राखनहार ना कोई।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

वक्त गुजरता गया। अस्पताल का काम मंथर गति से चल रहा था। अन्ततः 1995 में अस्पताल बन कर तैयार भी हो गया। चैनराज किसी न किसी तरह मदद करते ही रहे। अब अस्पताल को शुरु करने का महत्ती कार्य सिर पर था। डॉ. आर.के. अग्रवाल का सतत सहयोग कैलाश को शुरु से ही मिलता था। अस्पताल बनने के बाद उनकी भूमिका और बढ़ गई। बड़े अस्पताल की प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक दम्पत्ति डॉ.ए.के. पेन्डसे व उनकी पत्नी विनय पेण्डसे भी अस्पताल देख बहुत प्रभावित हुए। डॉ. अग्रवाल अत्यन्त मृदुभाषी व व्यवहार कुशल थे। वे अपने सरल व्यवहार एवं सहज उपलब्धता से अत्यन्त लोकप्रिय थे। मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने तो उन्हें भगवान नाम दे दिया था। डॉ. अग्रवाल के कारण नारायण सेवा के कार्यों से कई लोग से जुड़े तथा इसे प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

अस्पताल की शुरुआत 31 बिस्तरों के साथ हुई। डॉ. ए.एस.चूण्डावत, आर्थोपेडिक सर्जन थे। हाल ही बड़े अस्पताल से सेवा निवृत हुए थे। पोलियो के ऑपरेशनों का इन्हें हल्का सा अनुभव भी था। कैलाश इनके घर गया और अपने अस्पताल से जुड़ने का अनुरोध किया, वे मान गये। इसी तरह कुछ अन्य डॉक्टर भी रख लिये, हालांकि इन्हें पोलियो सम्बन्धी जानकारी नहीं थी। डॉ. परिहार को भी रख लिया। अस्पताल की शुरुआत हो गई।

अंश - 166

भिण्डी है गुणकारी

1– भिण्डी में विटामिन ए, बी, सी बहुत ही प्रचुर मात्रा में पाया जाता है ,इसमे प्रोटीन और खनिज लवणों का एक अच्छा स्रोत है।
2– भिण्डी गैस्टिक, अल्सर के लिए प्रभावी दवा है।
3– मृदुकारी भिन्डी संवेदनशील बड़ी आंत की सतह की रक्षा करती हैं। जिससे ऐंठन रुक जाती हैं। इसके सेवन से आंत में जलन नहीं होती है।
4– भिण्डी के लस के नियमित सेवन से गले, पेट, मलाशय और मूत्रमार्ग में जलन नहीं होती है ।
5– भिन्डी का काढ़ा पीने से सुजाक, मूत्र.च्छ, और ल्यूकोरिया में फायदा होता हैं ।
6– बीजरहित ताजा दो भिण्डी प्रतिदिन खाना श्वेतप्रदर, नंपुसकता, धातु गिरना रोकने में सहायक है।
7– इसमें मौजूद विटामिन बी, गर्भ को बढ़ने में मदद करता है और जन्मजात वि.तियों को रोकता है।
8– मधुमेह में इसके रेशे ब्लड शुगर को नियंत्रित रखते हैं।
9– इसका विटामिन सी श्वास रोगों से बचाता है।
10 इसके सेवन से त्वचा अच्छी दिखती है. भिन्डी को उबाल कर,मसल कर इसे त्वचा पर थोड़ी देर लगा कर रखें । धोने के बाद आप पायेंगे कि त्वचा बहुत मुलायम और ताजगी भरी लग रही है।
11– इसका सेवन कोलोन कैंसर से बचाता है। इसका विटामिन ए म्यूकस मेम्ब्रेन बनाने में मदद करता है, जिससे पाचन क्रिया बेहतर होती है।
12– इसके नियमित सेवन से किडनी की सेहत में सुधार होता है।
13– मोटापे को दूर करता है, कई बार शरीर में विटामिन्स की कमी से ज्यादा खाने का मन करता है। इसलिए भिन्डी मे मौजूद विटामिन्स उसकी कमी को दूर कर अनावश्यक भूख को मिटाते हैं।
14– इसके विटामिन हड्डियों को मजबूत बनाते हैं, यह रक्त की कमी को भी दूर करता है।
15– कोलेस्ट्रेरोल को कम करती है।
16– इसके विटामिन्स आँखों,बाल और इम्यून सिस्टम को बेहतर बनाते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

रात को 11 बजे करीबन कोटड़ा के डाक बंगले में पहुँचे। वहाँ पहले से ही रिजर्व कराया हुआ था। डाक बगले में व्यवस्था हो गई। कमरे में सो गए। सुबह 4 बजे उठे। हाँ, जल्दी उठे, जल्दी उठे। शांतिकुंज हरिद्वार ने तो आदत डाल दी थी 3 बजे उठने की। हाँ, 4 बजे उठे स्नानम ध्यानम समर्पयामी। हाँ,

मैं नहीं मेरा नहीं
यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है,
वह धन किसी का है दिया।

इसी भावना के साथ कोटड़ा में यज्ञ करने पहुँचे। बहुत श्रद्धा भक्ति के साथ वाह! महाराज नचिकेता अग्नि जी को आहुति देंगे, और जैसे ही बात की, एक गुण ले लीजिए, एक अवगुण छोड़ दीजिए। आप नशा छोड़िए, इधर बहुत कच्ची शराब पीते हैं, बहुत दुःख होता है– महाराज। ज्ञान की कमी है– महाराज। शरीर में अनेक प्रकार के कष्ट पहुँचाती है कच्ची शराब। हाँ, शराब छोड़िए, जीवन मोड़िए। किसी ने शराब छोड़ी, किसी ने अफीम छोड़ी, दो तीन महानुभावों ने पान मसाला– मौत मसाला छोड़ा।

एक व्यक्ति पास में आए, कान में धीरे से बोले– गुरु जी मानव कैलाश जी ये यज्ञ में दो सेठ बैठे हैं। आप के सामने दाहिने हाथ की तरफ बैठा है। एक बाएं हाथ की तरफ बैठा है। दोनों सगे भाई हैं। दाहिने हाथ की तरफ बड़े भाई बाएं हाथ की तरफ छोटा भाई। आपस में बोली चाली बंद है– महाराज 12–13 साल हो गए– महाराज आना जाना बंद है।

घर की देवियाँ आना जाना चाहती हैं, मगर पुरुषों ने मुकदमाबाजी कर रखी हैं। जमीन के मामले में 12–12 तरह के मुकदमे चल रहे हैं। कैलाश जी भाईसाहब गायत्री माता ऐसी प्रेरणा दे रही है– आप को। इनकी दुश्मनी छुड़ा दो। प्रेम बढ़ा दो। इनका एका करा दो। मैं क्या कर सकता हूँ।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 293 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर – 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023